5

कैसी हो पालक सभा?

ऋषभ कुमार मिश्र*

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की एक प्रमुख संस्तुति कि विद्यालयी शिक्षा गुणवत्तापूर्ण हो, इसके लिए विद्यालय और समुदाय में घनिष्ठ संबंध होना चाहिए। इसे ध्यान में रखते हुए यह लेख आनंद निकेतन की पालक सभा की विशेषताओं पर प्रकाश डालता है। इसमें बताया गया है कि किस तरह से आनंद निकेतन में पालक सभा द्वारा पालकों से प्रभावी संवाद स्थापित किया गया है? कैसे शिक्षकों द्वारा पालकों को पाल्यों की शिक्षा में सहभागिता के लिए सहायता उपलब्ध कराई जाती है? कैसे यह विद्यालय स्थानीय समुदाय के लिए प्रासंगिक विषयों के प्रति पालकों को जागरूक करता है? इसके आधार पर यह लेख राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की संस्तुतियों के आलोक में पालक सभा के आयोजन एवं संचालन से संबंधित निहितार्थों को प्रस्तुत करता है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की एक प्रमुख संस्तुति है कि विद्यालय और समुदाय का परस्पर घनिष्ठ संबंध होना चाहिए। यह नीति स्वीकार करती है कि विद्यालय के भीतर सीखने की प्रक्रिया में सुधार के साथ-साथ यह आवश्यक है कि विद्यार्थियों के परिवार और परिवेश में भी अनुकूल माहौल उपलब्ध कराया जाए। यदि किसी कारण से घरेलू परिवेश में बच्चों की पढ़ाई-लिखाई के बारे में उचित मार्गदर्शन और सहयोग नहीं मिल पा रहा है, तो विद्यालय द्वारा पहल करते हुए अभिभावकों को पाल्यों की शिक्षा का भागीदार बनने के लिए प्रेरित किया जाए। इसी संदर्भ में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में विद्यालयों को 'सामाजिक चेतना केंद्र' की भूमिका में देखा गया है, जो विद्यार्थियों की शिक्षा के साथ-साथ समुदाय के सशक्तिकरण में भी योगदान करें। इस भूमिका को निभाने के लिए विद्यालयों द्वारा समुदाय और पालकों के साथ संवाद के लिए प्रयुक्त युक्तियों एवं नीतियों पर पुनर्विचार करना होगा। इनमें से एक प्रमुख युक्ति पालक सभाओं का आयोजन है।

पालक सभाओं के अंतर्गत पालक और शिक्षक मिलकर विद्यार्थियों के विद्यालयी अनुभवों एवं प्रगति के बारे में चर्चा करते हैं। पालक सभा ऐसा मंच है, जिसके माध्यम से पालकों को अपने पाल्य की शिक्षा में भागीदार बनने के लिए आमंत्रित किया जा सकता है। इसके द्वारा विद्यालय भी पालकों की अपेक्षाओं और आकांक्षाओं से परिचित होता है। यह भी अवलोकनीय है कि यदि पालक, समाज के हाशिए के वर्गों से आते हैं तो उनके और विद्यालय के बीच एक अदृश्य प्रतिरोध विद्यमान होता है। दोनों एक-दूसरे के प्रति पूर्वाग्रह से ग्रसित होते हैं। एक ओर पालक अपनी कमज़ोर सामाजिक-आर्थिक हैसियत

**सहायक प्रोफेसर*, स्कूल ऑफ एजुकेशन, महात्मा गाँधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा, महाराष्ट्र 442 001

के कारण पालक सभा में अपेक्षित सहभागिता नहीं कर पाते हैं तो दूसरी ओर विद्यालय उन्हें एक ऐसी 'समस्या' के रूप में देखता है जो बच्चों को सीखने का अच्छा माहौल और संसाधन उपलब्ध नहीं करा पा रहे हैं (फेलर, 2010, डायर, जैकब, पाटिल और मिश्रा, 2022, मिश्रा, 2019)। ऐसी परिस्थिति उन विद्यार्थियों के संदर्भ में अधिक देखी जाती है, जो प्रथम पीढ़ी के अधिगमकर्ता हैं। इसके साथ सामुदायिक एवं पारिवारिक समस्याओं, जैसे— नशाखोरी, घरेलू हिंसा आदि के कारण विद्यार्थियों की शिक्षा प्रभावित न हो, इसके लिए भी पालकों की जागरूकता आवश्यक है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की संस्तुतियाँ इस तरह की पृष्ठभूमि वाले पालकों के संदर्भ अत्यधिक प्रासंगिक हैं, जिसके अनुसार विद्यालयों से अपेक्षित है कि वे पालकों और समुदाय के साथ घनिष्ठता से 'सामाजिक चेतना केंद्र' की भूमिका निभाएँ।

उपर्युक्त पृष्ठभूमि में यह लेख आनंद निकेतन विद्यालय द्वारा संचालित पालक सभा की विशेषताओं पर प्रकाश डालता है। आनंद निकेतन विद्यालय वर्धा के सेवाग्राम कस्बे में स्थित है। यह विद्यालय महात्मा गाँधी द्वारा प्रतिपादित नई तालीम के सिद्धांतों का अनुसरण करता है। इस विद्यालय में लगभग 250 विद्यार्थी और 20 शिक्षक हैं। यहाँ उत्पादक कार्यों को केंद्र में रखते हुए अधिगम गतिविधियों का आयोजन किया जाता है। इस विद्यालय के विद्यार्थी आस-पास के गाँवों से आते हैं। अधिकांश विद्यार्थियों के पालक किसान, मज़दूर एवं गाँव के आस-पास व्यवसाय करने वाले दुकानदार हैं। लेखक द्वारा इस विद्यालय की पालक सभाओं का अवलोकन किया गया। पालकों और शिक्षकों का साक्षात्कार लिया गया। इसके आधार पर इस लेख में व्याख्या की गई है कि आनंद निकेतन कैसे पालक सभा के माध्यम से अभिभावकों को उनके पाल्यों की शिक्षा में भागीदार बनने के लिए मार्गदर्शन और सहयोग प्रदान करता है? और किस तरह से इस विद्यालय की पालक सभा पालकों को उनकी नागरिक भूमिका के प्रति सचेत करता है?

आनंद निकेतन की पालक सभा

आनंद निकेतन के लिए पालक सभा ऐसा मंच है, जिसके माध्यम से अभिभावक और अध्यापक विद्यार्थियों के विद्यालयी अनुभवों पर संवाद करते हैं और उनकी प्रगति के बारे में साझी योजनाओं को तैयार करते हैं। इस मंच के माध्यम से विद्यालय दोहरी भूमिका निभाता है। पहला, वह अभिभावकों के प्रति अपनी जवाबदेही सुनिश्चित करते हुए विद्यालय की गतिविधियों, योजनाओं और पाल्यों की प्रगति से परिचित कराता है। दूसरा, वह अभिभावकों से स्थानीय सामुदायिक एवं सामाजिक समस्याओं पर संवाद कर उसके समाधान का कर्ता बनने के लिए भी प्रेरित करता है। विद्यालय की पालक सभा के बारे में इसकी संचालिका सुषमा ताई का मत दृष्टव्य है। उनके अनुसार आनंद निकेतन में जिस सामुदायिक एवं पारिवारिक पृष्ठभूमि के बच्चे हैं, उनकी बेहतर शिक्षा के लिए बच्चों के साथ-साथ वयस्कों के लिए सीखना और जागरूक होना ज़रूरी है। इसके लिए पालक सभा को एक ऐसे मंच की तरह प्रयुक्त किया जाता है जहाँ बच्चों, परिवार और समुदाय के लिए महत्वपूर्ण मुद्दों पर अभिभावकों से बातचीत की जाती है। यहाँ इस तथ्य को रेखांकित करने की आवश्यकता है कि आनंद निकेतन के सभी अभिभावक ग्रामीण परिवेश से आते हैं। इनमें से अधिकांश हाशिए के समुदाय से हैं, जिनकी शिक्षा का स्तर भी ऊँचा नहीं है। ग्रामीण और वंचित वर्ग के अभिभावक अपने पाल्यों की

शिक्षा के महत्व को समझते हैं, लेकिन शिक्षा प्रक्रिया में उनकी भागीदारी का स्तर संतोषजनक नहीं होता है। इस समस्या को दूर करने के लिए आनंद निकेतन द्वारा अभिभावकों से केवल उनके पाल्यों की अकादमिक प्रगति पर बातचीत नहीं होती, बल्कि स्वावलंबन, स्वच्छता, श्रम की प्रतिष्ठा जैसे नई तालीम के विषयों से लेकर उपभोग की आदतों, पारिस्थितिकी समस्याओं, जेंडर संवेदनशीलता जैसे समसामयिक मुद्दों पर भी बातचीत की जाती है।

पालक सभा का आयोजन एवं संचालन

पालक सभा के आयोजन से पूर्व विद्यालय में शिक्षकों की बैठक में इसके प्रस्तावित विषयों और तिथि का निर्धारण किया जाता है। इसके बाद पालक सभा के आयोजन की तिथि एवं समय के बारे में विद्यार्थियों द्वारा माता-पिता को निमंत्रण पत्र भेजा जाता है। यह सूचना पालक सभा होने से एक हफ्ता पहले दे दी जाती है। यह अवलोकनीय है कि विद्यालय द्वारा जब पालक सभा के लिए निमंत्रण भेजा जाता है तो उस पर उल्लिखित होता है कि— "कृपया ध्यान दें कि स्कूल के काम में आपकी भागीदारी आपके बच्चे के विकास के लिए अमूल्य है।" शोध कार्य के दौरान अवलोकन में पाया गया कि आनंद निकेतन में पालक सभा की बैठक के दो स्तर होते हैं। प्रथम, विद्यालय के समस्त पालकों के साथ सामूहिक बैठक। द्वितीय कक्षा स्तर पर पालक सभा की बैठकें करना। इसके अलावा शिक्षक आवश्यकतानुसार स्वयं भी समुदाय का दौरा करते हैं। प्रत्येक बैठक के तीन घटक होते हैं। प्रथम, विद्यार्थियों द्वारा शिल्प, कार्यानुभव और अकादमिक परियोजनाओं आदि का प्रदर्शन। द्वितीय, पाल्यों की अकादमिक प्रगति, विद्यालय की गतिविधियों, अभिभावकों के विचारों को आमंत्रित करने का घटक होता है। तृतीय, पालकों के साथ स्थानीय और समसामयिक मुद्दों और शिक्षा के सामाजिक-सांस्कृतिक-आर्थिक सरोकारों पर चर्चा। प्रत्येक पालक सभा के संचालन के लिए कुछ शिक्षकों को नामित किया जाता है। प्रत्येक पालक सभा में विद्यालय की संचालिका सुषमा ताई स्वयं उपस्थित रहती हैं।

नई तालीम के आधारभूत सिद्धांतों पर चर्चा

सत्र के आरंभ में होने वाली पालक सभा की बैठक में विद्यालय द्वारा अभिभावकों के साथ नई तालीम के सिद्धातों पर चर्चा की जाती है। इसके अलावा पालक सभा की अन्य बैठकों में भी इससे जुड़े विषय होते हैं। उदाहरण के लिए, जया ताई ने सत्र की प्रथम पालक सभा में व्याख्या की कि नई तालीम बच्चों के संपूर्ण विकास में कैसे मदद करती है? उन्होंने बच्चों के सामाजिक, मनोवैज्ञानिक और सांवेगिक विकास के उदाहरण दिए और बताया कि कैसे कार्यानुभव, शिल्प एवं स्वानुशासन पर बल देकर आनंद निकेतन इन क्षेत्रों में अपने विद्यार्थियों का विकास कर रहा है। एक अन्य पालक सभा में शिक्षा में बच्चों की स्वतंत्रता और अभिव्यक्ति के महत्व पर प्रकाश डालते हुए विद्यालय में संचालित मनन सत्र और बाल सभाओं की चर्चा की। इसी प्रकार जीवन दादा ने पालकों के साथ निर्माणवाद पर चर्चा की और बताया कि बच्चे कैसे सीखते हैं? उन्होंने पालकों से आग्रह किया कि वे पाल्यों को अपने आप खोजबीन करने और सीखने में मदद करें न कि उनके विचार करने, उनके ज्ञान पर पाबंदी लगाने का कार्य करें। इन पालक सभाओं में देखा गया कि पालक केवल

सुनते नहीं बल्कि प्रश्न भी पूछते हैं। उदाहरण के लिए, अभिभावकों ने उत्पादक कार्यों में संलग्नता के कारण विषय ज्ञान की उपेक्षा के बारे में चिंता व्यक्त की। इसी तरह विद्यालय द्वारा मातृभाषा में शिक्षा के महत्व को स्वीकार किया लेकिन अंग्रेजी की उपेक्षा न हो इसका भी सुझाव दिया।

विद्यार्थियों द्वारा उत्पादक कार्यों का प्रदर्शन

पालक सभा के माध्यम से आनंद निकेतन अभिभावकों को उनके पाल्यों की अकादमिक प्रगति से परिचित कराता है। इसके लिए विशेष रूप से विद्यार्थियों द्वारा की गई उत्पादक कार्यों के संबंधित परियोजनाओं का प्रदर्शन किया जाता है। इसके दौरान विद्यार्थी उक्त परियोजनों के अकादमिक और सामाजिक-सांस्कृतिक मूल्यों पर प्रकाश डालते हैं। विद्यार्थियों की प्रस्तुति के बाद शिक्षक और अभिभावक भी चर्चा में भाग लेते हैं। इस तरह की चर्चाएँ अभिभावकों को शिल्प आधारित शिक्षण के महत्व से परिचित कराती हैं। उदाहरण के लिए, कक्षा 8 के विद्यार्थियों के एक समूह, जिसमें गौरी, श्रावणी, प्रणाली मोहिनी और प्रतीक थे, ने पालक सभा के सम्मुख कृषि कार्यानुभव से संबंधित अनुभव साझा किए। इन विद्यार्थियों ने बताया की इनकी कक्षा ने सब्ज़ियों को उगाना सीख लिया है। इस दौरान उक्त विद्यार्थियों ने खेत तैयार करना, खाद बनाना, बीज का संरक्षण करना, बीज लगाना, खरपतवार निकालना एवं मित्र कीट एवं शत्रु कीट की पहचान करना सीख लिया है। इसी क्रम में ये विद्यार्थी बताते हैं कि कृषि की गतिविधियों के दौरान गणित, विज्ञान, पर्यावरण, अर्थव्यवस्था से संबंधित विषय सीखे हैं। इन्होंने विस्तृत उदाहरण के तौर पर भिंडी की के उत्पादन लागत, विक्रय और लाभ की गणना से संबंधित प्रस्तुति दी। इस समूह ने साझा किया कि उन्होंने फसल की लागत निर्धारण के बाद उनका मूल्य तय किया। यह भी बताया कि स्कूल के साथियों को कम दाम पर सब्ज़ियाँ दीं। इसके अलावा जैविक खेती के लाभ और रासायनिक खेती के नुकसानों पर प्रस्तुति दी गई। इसी समूह से प्रणाली और मोहिनी ने कीट नियत्रंण के जैविक तरीके बताए। इन्हीं विद्यार्थियों ने प्रोजेक्टर पर सभी अभिभावकों को एक विडियो दिखाया जो वॉटर हार्वेस्टिंग से संबंधित था। जिसमें गांव के लोग वर्षा का पानी वाटर हार्वेस्टिंग द्वारा सुरक्षित कर रहे थे। शेष विद्यार्थियों द्वारा एक अन्य वीडियो दिखाया गया जिसमें भूमि के विभिन्न रूप कैसे तैयार हुए, खनन, वहन, संचयन कार्य, नदी के कार्य एवं उसके रूप, हिम नदी के कार्य और उसके रूप, हिम नदी के संचयन कार्य आदि का प्रदर्शन था। विद्यार्थियों के प्रदर्शन और प्रस्तुति के बाद अभिभावकों ने विद्यालय की शिल्प आधारित शिक्षण पद्धति की सराहना की। इस दौरान अध्यापकों ने अभिभावकों के सम्मुख व्याख्या की कि कैसे इन गतिविधियों से बच्चों में सहकार भावना और आत्मविश्वास एवं उत्पादक कार्यों को लेकर सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित हुआ है। एक अन्य अवसर पर कक्षा 9 के विद्यार्थी आशू, श्वेता, रेवती और प्रतीक ने पालक सभा में सिलाई कार्यानुभव का प्रदर्शन किया। इन बच्चों ने सिलाई के दौरान जो वस्तुएँ बनाई थीं उनको पालक सभा में दिखाया। आंसू और प्रतीक ने बताया कि विज्ञान और गणित के ज्ञान का निर्माण सिलाई द्वारा कैसे किया जाता है? इसी तरह एक अन्य पालक सभा में कक्षा 9 के विद्यार्थी श्रुति, क्षितिज, सुशांत ने चित्रकला

को प्रदर्शित किया। विद्यार्थियों की प्रस्तुति समस्त पालकों को विद्यालय द्वारा अपनाए जा रहे विशिष्ट शिक्षणशास्त्रीय तरीकों की प्रक्रिया और परिणाम से परिचित कराती है। यहाँ देख सकते हैं कि कृषि, सिलाई और कला के कार्यों की प्रस्तुति में विद्यार्थीगण विषय ज्ञान के साथ-साथ अर्जित कौशलों को भी पालक सभा के सम्मुख रखते हैं। पालक सभा के सम्मुख ये प्रस्तुतियाँ अभिभावकों को नई तालीम के शिक्षणशास्त्रीय नवाचारों से परिचित कराती हैं। इसके साथ ही उनके सामने गाँधीवादी मूल्यों की व्याख्या भी प्रस्तुत की जाती है। विद्यार्थियों की इन प्रस्तुतियों के प्रति पालकों में उत्साह रहता है। पालक सभा के बाद उनसे अनौपचारिक साक्षात्कार में प्रकट हुआ कि वे विद्यार्थियों के इस तरह के प्रदर्शन को वे 'अच्छे तरह से सीखना', 'विद्यालय और शिक्षकों की मेहनत' और 'काम की शिक्षा' जैसे वाक्यांशों से विभूषित कर रहे थे। तात्पर्य है कि विद्यालय द्वारा पालक सभा में विद्यार्थियों के प्रदर्शन को जिस उद्देश्य से रखा गया, उसकी प्राप्ति हो रही थी। इसी का प्रभाव है कि जब क्षेत्र भ्रमण के दौरान पालकों से आनंद निकेतन की विशेषता पर बातचीत हुई तो वे बल दे रहे थे कि उत्पादक कार्यों का गणित और विज्ञान से संबंध होता है। इसके द्वारा इन विषयों को पढ़ाया जा सकता है। विद्यार्थियों द्वारा उत्पादक कार्यों की प्रस्तुति पालकों को भी स्थानीय उत्पादक कार्यों, जैसे— कृषि, कताई और सिलाई के वैज्ञानिक आयामों से परिचित कराती है। क्षेत्रकार्य के दौरान अवलोकन में पाया गया कि पालक सभा के बाद कई बार अभिभावक संबंधित उत्पादक कार्य के अध्यापक से इस बात पर चर्चा करते हैं। कि कैसे वे इन कार्यों को अपना सकते हैं?

विद्यार्थियों के सीखने की प्रक्रिया में पालकों को भागीदार बनाना

आनंद निकेतन विद्यालय में विद्यार्थियों की वैयक्तिक विविधता का सम्मान किया जाता है। विद्यालय ने सोद्देश्य फैसला किया कि इस विषय पर अभिभावकों को जागरूक करने की आवश्यकता है। अभिभावकों से होने वाली बातचीत के आधार पर विद्यालय इस तथ्य से परिचित हो चुका था कि अधिकांश अभिभावक गणित, विज्ञान और अंग्रेज़ी में उपलब्धि, प्रतियोगिताओं में सफलता और अन्य बच्चों से अपने पाल्य की तुलना की प्रवृत्ति रखते हैं। वे केवल गणित, विज्ञान और अंग्रेज़ी के किताबी ज्ञान को उच्च बनाने की अपेक्षा रखते हैं। इन विषयों पर बातचीत करने के लिए आनंद निकेतन के शिक्षकों ने पाल्यों के साथ कक्षा स्तर पर बैठक की। इन बैठकों में प्रत्येक अभिभावक को उसके पाल्य के अनूठेपन से परिचित कराया गया। अध्यापकों ने अभिभावकों को बताया कि उनके पाल्य अलग-अलग विषयों में अच्छा कर रहे हैं। कोई खेती में अच्छा कर रहा है तो कोई खेल में। कोई कला में रुचि ले रहा है तो कोई सिलाई में। इसी तरह पालकों को अकादमिक विषयों के साथ-साथ सह-अकादमिक गतिविधियों, जैसे— खेल और कला के महत्व से परिचित कराया गया। उन्हें उत्पादक कार्यों द्वारा गणित, विज्ञान एवं भाषा सीखने के प्रयोगों के बारे में बताया गया। इस दौरान अभिभावकों ने अपने-अपने पालकों के बारे में अधिक जानने की जिज्ञासा भी प्रकट की। अभिभावकों ने अपने पाल्यों के घर में व्यवहार और गतिविधियों के बारे में भी अध्यापकों को बताया।

अभिभावकों के प्रश्नों को संबोधित करने के अतिरिक्त विद्यालय अभिभावकों से अपनी अपेक्षा भी साझा करता है। इस हेतु पालक सभा में चर्चा की गई कि जो माता-पिता अपने बच्चों के लिए विद्यालय की बालसभा या अन्य गतिविधियों में भागीदार बनते हैं, उनके बच्चों के सीखने के स्तर अन्य बच्चों से ऊँचा होता है। सुषमा ताई ने अभिभावकों से साझा किया कि अभिभावकों की पालक सभा में भागीदारी बच्चों के मनोबल को भी बढ़ाती है। एक पालक सभा में अभिभावकों को अपने पाल्य के सीखने की प्रक्रिया में भागीदार बनने के लिए प्रोत्साहित किया गया गया। उनसे कहा गया कि वे दैनंदिन अवलोकनों के आधार पर बच्चों की विभिन्न गतिविधियों का अवलोकन करें और इसे अध्यापकों के साथ साझा करें। इस बैठक में विद्यालय और घर में सातत्य पर बल देते हुए एक शिक्षक ने अभिभावकों से अपना अनुभव साझा किया कि जो बच्चे स्कूल में श्रम आधारित कार्य नहीं करते हैं, वे घर पर भी नहीं करते हैं। इसके बाद पालकों को इस दिशा में आगे आने का अनुरोध करते हुए उन्हें सफ़ाई, कृषि और स्वयंपाक के कार्यों में बच्चों की भागीदारी के अंतर्निहित मूल्यों से परिचित कराया। एक अन्य बैठकों में पालकों के साथ केवल इस विषय पर बातचीत की गई कि वे अपने पाल्यों से विद्यालय की गतिविधियों के बारे में बातचीत करें। अभिभावकों से कहा गया कि वे बच्चों से पूछे कि स्कूल में वह क्या करते हैं? और कैसे करते हैं? उन्हें क्या समस्याएँ आ रही हैं? उन्हें किस कक्षा में सहयोग की आवश्यकता है आदि। इस तरह की बातचीत से अभिभावक बच्चों की जिन समस्याओं से अवगत हों, उसे अध्यापक के साथ साझा करें। विद्यालय अभिभावकों को विशेषज्ञ के रूप में आमंत्रित करता है। प्रत्येक पालक सभा में देखा गया कि विद्यालय द्वारा अभिभावकों से उनके हुनर और रुचि के बारे में चर्चा की गई। उन्हें विद्यालय में आकर संबंधित हुनर को बच्चों को सिखाने का निमंत्रण दिया गया। कई पालकों ने इस निमंत्रण को स्वीकार किया और विद्यालय आकर विद्यार्थियों से अंतःक्रिया की। पालक सभाओं में माता-पिता अपेक्षाओं को भी खुलकर रखते हैं। अलग-अलग पालक सभाओं में पालकों ने गणित, विज्ञान और अंग्रेज़ी के विषय ज्ञान से संबंधित चिंताओं को विद्यालय के सामने रखा। विद्यालय ने अध्यापकों की शंकाओं और चिंताओं को गंभीरता से लिया।

पालक सभा के दौरान अभिभावकों को भी अपने पाल्यों में आए सकारात्मक बदलावों को साझा करने के लिए प्रेरित किया जाता है। इसका समर्थन में निम्नलिखित उद्धरणों को देख सकते हैं—

"मैं अपने बच्चों में बहुत सारे बदलाव देख रही हूँ। मेरा बच्चा अपने काम को करना सीख गया है और वह घर में हमारी मदद भी करता है। अभी मेरा बच्चा कक्षा 6 में पढ़ रहा है और वह बहुत संवेदनशील भी हुआ है। सबसे अच्छे से बात करता है। लोगों से अच्छे से व्यवहार करता है इस तरह के बदलाव हम देख रहे हैं।"

"मेरे बच्चे ने कुछ दिन पहले घर पर सब्ज़ियों के बीज लगाएँ। अब वह उन्हें तैयार कर रहा है। मेरा बच्चा गणित में अच्छा है। भाषा में भी अच्छा है, लेकिन अभी अंग्रेज़ी पर ध्यान देने की ज़रूरत है और जो बहुत ज़्यादा मुझे नज़र नहीं आ रही हैं।"

"मुझे लगता है कि मेरे बच्चे को आनंद निकेतन अच्छे से सिख रहा है। वह कई बार सामाजिक मुद्दों के बारे में बात करता है। मुझे गाँधी और अंबेडकर के विचारों को बताता हैं। एक बार वह कह रहा था कि उसे अंबेडकर जैसा बनना है।"

उपर्युक्त उद्धरणों से स्पष्ट है कि आनंद निकेतन के पालक विद्यालय की अधिगम संस्कृति के प्रति सकारात्मक विचार रखते हैं। वे विद्यालय के लक्ष्यों और शिक्षणशास्त्रीय अनूठेपन की सराहना करते हैं। उन्होंने अपने पालकों की अकादमिक प्रगति का भी अवलोकन किया है। वे इससे संतुष्ट हैं। वे उनमें हो रहे वैचारिक परिवर्तनों को भी पहचान रहे हैं।

सामुदायिक एवं समसामायिक घटनाओं पर चर्चा

पालक सभा में अध्यापकों द्वारा पालकों के साथ ऐसे समसामयिक और स्थानीय विषयों पर चर्चा की जाती है जो उनके परिवार और बच्चे के जीवन को प्रभावित करती हैं। विद्यालय द्वारा पालक सभाओं में जेंडर संवेदनशीलता से संबंधित विषयों का समावेश किया जाता है। इस बारे में सुषमा ताई का मानना है कि अभिभावकों के ग्रामीण परिवेश से संबंधित होने के कारण आवश्यक है कि उनके रोज़मर्रा के अभ्यासों में व्याप्त जेंडर पूर्वग्रहों पर बात करें। हम उन अभ्यासों को प्रश्नांकित करें जो जेंडर समानता के लिए चुनौती हैं। उन्होंने यह भी साझा किया कि कई परिवारों में घरेलू हिंसा की समस्या व्याप्त है। इससे निपटने के लिए अभिभावकों से इस विषय पर बातचीत आवश्यक है। इस परिप्रेक्ष्य को ध्यान में रखते हुए पालक सभा के एक सत्र में अभिभावकों को जेंडर और सेक्स में अंतर से परिचित कराया गया। एक अन्य सत्र में पुरुष अभिभावकों और महिला अभिभावकों के साथ घर के कार्य और बाहर के कार्य में दोनों की भागीदारी पर बातचीत की गई। इसी सत्र में परिवार के निर्णय में महिलाओं और लड़कियों के पक्ष को शामिल करने पर चर्चा हुई।

एक पालक सभा में दैनिक उपभोग में संतुलन पर चर्चा करते हुए जीवन दादा ने विचार रखा। उन्होंने गाँधी का संदर्भ लेते हुए आवश्यकता और लालच में अंतर को व्याख्यायित किया। इसी चर्चा में बल दिया गया कि मीडिया के प्रभाव अधिक उपभोग की प्रवृत्ति बढ़ रही है। टी.वी. के विज्ञापन हमें जिन उत्पादों और उपभोग आदतों की ओर आकर्षित करते हैं, वे हमेशा हमारे लिए उपयोगी हों, ऐसा आवश्यक नहीं है। अभिभावकों के साथ बच्चों से जुड़े लोकप्रिय खाद्य उत्पादों के देशज विकल्प पर चर्चा की गई। अभिभावकों को टिफ़िन में हरी सब्ज़ियों, दालों और परंपरागत खाद्यान्नों की मात्रा बढ़ाने का सुझाव दिया गया। विद्यालय ने पालकों के साथ कचरा प्रबंधन, त्यौहारों के आयोजन में प्रदूषण से बचाव और बच्चों के जीवन में मीडिया के बढ़ते हस्तक्षेप जैसे विषयों पर भी चर्चा का आयोजन किया। इन चर्चाओं में बल दिया गया कि हमारे दैनिक जीवन में परिवार के स्तर पर उक्त मुद्दों पर समाधानोन्मुख क्रियाकलाप होने चाहिए। समुदाय में कचरा प्रबंधन, स्वच्छता, प्रदूषण से मुक्ति आदि के मौलिक प्रयास पालक स्वयं मिलकर कर सकते हैं। विद्यालय ने पालकों के साथ सर्वधर्म समभाव पर भी बातचीत की। पालकों के सामने इस प्रकरण को रखते हुए अध्यापकों ने अपने अनुभवों के आधार पर बताया कि कैसे विद्यार्थी बचपन में ही समझ जाता है कि वह किस जाति

और धर्म का है? किस जाति और धर्म को अधिक महत्व मिलता है? कैसे एक धर्म और दूसरे धर्म के लोगों के बीच मतभेद होता है? अभिभावकों को इन विषयों पर पाल्यों से बात करनी चाहिए। इसके अतिरिक्त विद्यालय अभिभावकों के साथ उनकी आदतों, जैसे— धुम्रपान और मदिरा सेवन, घरेलू हिंसा, गाली-गलौच, बच्चों को मारना-पीटना उनके साथ बुरा बर्ताव करने के नकारात्मक प्रभाव के बारे में भी बातचीत की गई। विद्यालय ने अभिभावकों के साथ मोबाइल और टीवी के बढ़ते चलन से बच्चों में आई आक्रामकता और उसके दुष्परिणाम के बारे में गहन चर्चा की। इस चर्चा में अभिभावकों से उनके पारिवारिक गतिविधियों का उदाहरण पूछते हुए बदलती जीवनशैली में उक्त उपकरणों की उपस्थिति के बारे में बातचीत की गई। इसके सकारात्मक पक्षों के साथ-साथ नकारात्मक पक्षों के बारे में सचेत किया गया। कैसे बच्चों के हाव-भाव, आदतों, भाषा और संवेगों को मीडिया प्रभावित कर रहा है? इससे संबंधित खबरों को भी साझा किया गया।

उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि आनंद निकेतन ने पालक सभा को ऐसे मंच के रूप में स्थापित किया है जो विद्यालय और समुदाय के संबंध को गहन करने का कार्य कर रहा है। जैसा कि आरंभ में चर्चा की गई थी कि आनंद निकेतन में अधिकांश विद्यार्थी गरीब और वंचित परिवारों से आते हैं। ऐसे परिवारों के बच्चों के पालकों की मुख्य समस्या विद्यालय के साथ सौहार्द्रपूर्ण संबंध की स्थापना करना है। आनंद निकेतन ऐसा करने में सफल हो रहा है। आनंद निकेतन ने पालक सभा के माध्यम से समुदाय के सशक्तिकरण का कार्य कर रहा है। चाहे वह उनके लिए जैविक कृषि जैसे प्रकरण पर चर्चा हो या महिला प्रजनन स्वास्थ्य से संबंधित चर्चा इसके माध्यम से अभिभावक विद्यालय को 'बच्चों को पढ़ाने' वाली संस्था से आगे बढ़कर एक ऐसी सामुदायिक संस्था के रूप में देख रहे हैं, जो उनकी दैनंदिन परिस्थितियों के प्रति सचेत है। इसी के विस्तार रूप में विद्यालय अभिभावकों को उनके बच्चों की शिक्षा में सक्रिय भागीदारी की भूमिका से भी परिचित कराता है। विद्यालय ने अभिभावकों को केवल यह नहीं बताया है कि वे गृहकार्य कैसे पूरा कराएँ? बल्कि अपने रोज़मर्रा के अभ्यासों और पाल्यों के कार्यों से परिचित कराया है। उन्हें 'निर्माणवादी' प्रारूप के अंतर्गत सीखने का भागीदार बनने का रास्ता सुझाया है। सबसे बढ़कर पालकों को आश्वस्त किया है कि वे कभी भी विद्यालय के साथ किसी भी आवश्यक मुद्दे पर संप्रेषण कर सकते हैं। आनंद निकेतन द्वारा किए जा रहे इस तरह के प्रयोग विद्यालय-समुदाय सांतत्य के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। आनंद निकेतन ने पालक सभा के माध्यम से अभिभावकों के साथ संवाद की जिस परिपाटी को विकसित किया है, उसमें विद्यालय की भूमिका 'सामाजिक चेतना केंद्र' जैसी है। इस भूमिका में विद्यालय पालकों को पाल्य की शिक्षा में भूमिका निभाने के साथ-साथ समुदाय में भी सकारात्मक बदलाव की पहल करने के लिए प्रेरित कर रहा है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के आलोक में विद्यालय और समुदाय के संबंध की पुनर्कल्पना करते हुए आनंद निकेतन जैसी पालक सभा का आयोजन अन्य विद्यालयों द्वारा भी किया जा सकता है। इसके लिए विद्यालयों को निम्नलिखित तथ्यों का ध्यान रखना चाहिए—

- पालक सभा की योजना बनाते समय ध्यान रखा जाए कि वे इसमें सहभागिता के लिए

उत्साहित हों। पालक सभा के दौरान पालकों की पृष्ठभूमि और व्यावसायिक संलग्नता को ध्यान में रखते हुए उनके प्रति तद्नुभूतिपूर्ण दृष्टि रखने का प्रयास किया जाए। पालकों को घर पर दूसरा शिक्षक बनने के लिए प्रेरित न किया जाए बल्कि, उनकी पृष्ठभूमि को ध्यान में रखते हुए बच्चों की निगरानी और सहयोग की अपेक्षा की जाए। उन्हें सचेत किया जाए कि सीमित संसाधनों में घरेलू परिवेश द्वारा कैसे पाल्यों की शिक्षा में सहयोग किया जा सकता है? पालकों को आश्वस्त किया जाए कि उनका पाल्य एक सुरक्षित परिवेश में है, जहाँ सीखना एक आनंदपूर्ण गतिविधि है।

- पालकों के साथ केवल पाल्यों की अकादमिक उपलब्धि और समस्याओं पर चर्चा ना की जाए, बल्कि उनकी आकांक्षाओं, उनकी चुनौतियों को भी समझने की कोशिश की जाए। उनके सामाजिक-सांस्कृतिक विशेषताओं को पहचाना जाए और इसकी सराहना की जाए। इससे विद्यालय और पालकों के बीच संवादहीनता की स्थिति का समाधान किया जा सकता है।
- पालकों की सहायता से शिक्षक विद्यालय के बाहर विद्यार्थियों की गतिविधि एवं अनुभवों के बारे में जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। इससे उन्हें शिक्षण अधिगम गतिविधियों के आयोजन में सहायता मिलेगी। अभिभावकों से बातचीत करने के दौरान उन संभावित सामुदायिक संसाधनों की पहचान की जाए, जिसकी मदद से विद्यार्थियों को आनुभविक अधिगम का अवसर प्रदान किया जा सकता है। इसके साथ-साथ समुदाय के उन 'स्याह' पक्षों की पहचान भी की जाए, जिन पर आलोचनात्मक चिंतन करना आवश्यक है। इसके बारे में विद्यार्थियों और पालकों दोनों से बातचीत की जाए।
- पालकों के लिए प्रासंगिक विषयों, जैसे— जेंडर विभेद, घरेलू हिंसा, मद्यपान, स्त्री स्वास्थ्य आदि पर संवाद सत्रों का आयोजन किया जाए। इनके माध्यम से उक्त पक्षों से जुड़ी समस्याओं और उनके पाल्यों की शिक्षा पर पड़ने वाले दुष्प्रभावों को कम किया जा सकता है।
- पालकों से संवाद करते हुए उनके सामने पाल्य की नकारात्मक या अतिरंजित छवि को प्रस्तुत न किया जाए। इन दोनों स्थितियों में पालक अपने पाल्य की वास्तविक प्रगति का आकलन नहीं कर पाते हैं। बेहतर हो कि पाल्य, विद्यालय में सीखे हुनर एवं अर्जित दक्षताओं का पालकों के सामने प्रदर्शन करें। इसके लिए अलग से भी कार्यक्रम आयोजित किए जा सकते हैं।
- पालकों को उनके पाल्य की अकादमिक उपलब्धियों एवं सीमाओं के साथ-साथ उनकी सामाजिक-भावनात्मक प्रगति से भी परिचित कराया जाए, जैसे— उनका पाल्य समूह में कैसे कार्य करता है? उसका दोस्तों और शिक्षकों के साथ कैसा संबंध है? उसकी अभिरुचियां क्या हैं? उक्त प्रकरणों पर पालकों के विचारों को भी सुना जाए। यदि पाल्य के साथ अभिभावकों और अध्यापकों के अनुभवों में अंतर है, तो दोनों मिलकर इस पर कार्य कर सकते हैं।

- पालक सभा को विद्यालय ऐसे मंच की तरह भी उपयोग कर सकता है, जो आरंभिक साक्षरता सामग्री, जैसे— चित्रों वाली पुस्तकों या बरखा शृंखला की पुस्तकों को पाल्यों तक पहुँचाए। पालकों को आधारभूत साक्षरता और गणितीय दक्षता के विकास के लिए बच्चों से बातचीत करने के तरीके, विशेषरूप से कहानी सुनाने, घरेलू गतिविधियों में गणित और अक्षर की पहचान, कला सामग्रियों के उपयोग के प्रति सचेत किया जा सकता है।

संदर्भ

डायर, के.एस. जैकब, आई. पाटिल और पी. मिश्रा. 2022. कनेक्टिंग फैमिलीज विद स्कूल्स : द ब्यूरोक्रेटाइजड रिलेशंस ऑफ 'एकाउंटीबिलीटी इन इंडियन एलीमेंट्री स्कूलिंग'. *थर्ड वर्ल्ड क्वाटरली.* 43(8), पृ.सं. 1875–1895.

फेलर, ए. 2010. *इंगेजिंग 'हार्ड टू रीच' पैरेंट्स*. ससेक्स : विली ब्लैकवेल.

मिश्रा, आर.के. 2017. विद्यालयेतर विमर्श और अभिभावक. *भारतीय आधुनिक शिक्षा*. 38(2), पृ.सं. 66–79.

शिक्षा मंत्रालय. 2020. *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020*. भारत सरकार, नई दिल्ली.